अमृतकाल में रानी दुर्गावती के विचारों की प्रासंगिकता

योगेंद्र 'भारद्वाज'

नाके भूमितले फणीशभवने सिद्धिः सदा सेविता
सासंख्ये प्रवलारिवृन्दहरणी दुर्गेव दुर्गावती।
उर्वरा सर्वतो भूमिः मध्यतो नर्मदा नदी
विज्ञा दुर्गावती राज्ञी गढाराज्ये त्रयो गुणाः॥[1]

मध्य भारत की सुनहरी भूमि पर स्थित, कालिंजर के किले में, चंदेल वंश में उत्पन्न महारानी दुर्गावती की शौर्य गाथा से पूरा भारत परिचित है। रानी दुर्गावती के शासनकाल में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नामक चारों पुरुषार्थ विद्यमान थे और आकाश-वायु-अग्नि आदि पंचमहाभूत संतुलित होकर माता वसुंधरा संरक्षण व संवर्धन करने को लालायित थे।

प्रजा खुशहाल थी और अर्थव्यवस्था समृद्धि की हिलोरें मार रही थी। चन्दन से महात्माओं का अभिनंदन और मंदिरों में पुष्पों से प्रभु का वंदन होता था। उनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण गोंडवाना के परिक्षेत्र में रानी दुर्गावती का जीवनवृत्त बच्चे-बच्चे की मुँहबोली शौर्यगाथा बन चुका है।

नवरात्राेंं में जन्मी (तिथि : 05 अक्टूबर, 1524, स्थान : कालिंजर दुर्ग) रानी को माता भगवती की विशेष अनुकंपा जानकर ही महाराजा कीरत सिंह ने अपने

[1]. दुर्गावती : एक बलिदान गावा, शंकर दयाल भारद्वाज, प्रस्तावनांशा

ज्योतिषाचार्यों से विचार-विमर्श करने के पश्चात् उस कन्या का नाम दुर्गावती रखा था, जो खेलने-कूदने की अल्पायु में ही शस्त्रास्त्रों में अपनी रुचि दिखाने लगी थी। इस संदर्भ में प्रो. चित्राभूषण श्रीवास्तव जी की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करने योग्य हैं–

पंद्रह सौ चौबीस में जन्मी वो चंदेलों की शान थीं
कालिंजर राजा की बेटी वो इकलौती संतान थीं।
दुर्गाष्टमी अवतरण दिवस दुर्गा का ही अवतार थी,
थर्राये मुगलों की सेना ऐसी भीषण ललकार थी।। [2]

महारानी दुर्गावती से संबंधित अनेक वीरगाथाओं व किस्सों को तो हम अपने पूर्वजों से सततरूपेण सुनते चले आए हैं, किंतु संप्रति इस आलेख में महारानी के उन विचारों पर भी चर्चा अपेक्षित है, जो आजादी के इस अमृतकाल में प्रासंगिक है अथवा यह कहना अप्रत्याशित नहीं होगा कि भारतीय सामाजिक व आर्थिक समृद्धि में रानी दुर्गावती का जीवनवृत्त व उनके विचार अनुकरणीय हैं।

गोंडवाना रानी के राज्य की विदेश नीति तथा उनके निर्णयों में राज्य की संप्रभुता, स्वतंत्रता तथा सामाजिक समरसता को सदैव ध्यान में रखा गया था। संप्रति, रानी दुर्गावती के 500वें जन्मवर्ष में उनके ये विचार आधुनिक भारतीय लोकतंत्र के लिए अवश्य ही प्रेरक हैं, क्योंकि जब समूचा विश्व दो गुटों में बँटा हुआ है, तो प्रजा के कल्याण हेतु ऐसे कठिन निर्णय लेने होते हैं, जो राज्य की संप्रभुता, अक्षुण्णता और स्वतंत्रता को ठेस न पहुँचावे। रानी दुर्गावती ने मुग़ल आक्रांता अकबर को उसी की भाषा में प्रत्युत्तर दिया, जबकि वे मुग़ल सैन्य शक्ति से भली-भाँति परिचित थीं। वे अपने राज्य की विदेशनीति और आंतरिक सुरक्षा हेतु अपनी गुप्तचर संस्था के साथ नियमित रूप से बैठती थीं, जैसा कि वर्तमान काल में किसी देश का प्रधानमंत्री अपनी गुप्तचर संस्था के साथ बैठक करता है और अपनी विदेश नीति व कूटनीति को कार्यान्वित करता

[2]. प्रो. वित्रभूषण श्रीवास्तव के कविता-संग्रह से संकलित

है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि समसामयिक संदर्भ में महारानी दुर्गावती की विदेश नीति विषयक विचार अतिप्रासंगिक हैं।

विख्यात शासिका दुर्गावती ने गोंडवाना राज्य के रामनगर, नयनपुर, कंजरिया, कांजीवाड़ा, लांजी, धूमा, कर्तक, बैहर, डिंगैरी, कोतमा, गाडरवारा, वनखेडी, सोहागपुर, मैहर, गैरतगंज, भेलसा, गंजवसौदा, रायसेन, सिरींज, भोजपाल, सिहोरा, पनानगर आदि क्षेत्रों में सुव्यस्थित जलापूर्ति व जल निकास हेतु अनेक तालाब, नहर, बावली, कुओं आदि का निर्माण कराया था।[3] तात्कालिक परिस्थिति में यह कार्य निःसंदेह प्रजाकल्याण हेतु सराहनीय प्रयास था, किंतु संप्रति, जब महारानी दुर्गावती का 500वाँ जन्मदिवस वर्ष है तो जलवायु परिवर्तन की इस बेला में तत्कालीन जलापूर्ति व निकास व्यवस्था प्रासंगिक-सी लगती है। वर्तमान जबलपुर के परिक्षेत्र में यह भी प्रसिद्ध है कि इस क्षेत्र में लोककल्याणार्थ रानी ने 52 तालाबों का निर्माण कराया था जिससे वर्षा के जल का संरक्षण और भू-जल की आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। इस समय, सकल विश्व स्वच्छ जल की उपलब्धता हेतु संघर्षरत है, जल बचाने की बातें प्रतिदिन हम सोशल मीडिया के माध्यम से देखते हैं, ऐसे में महारानी दुर्गावती के जलापूर्ति संबंधी विचार और भारत के विविध क्षेत्रों में नहर, तालाब, कुओं आदि का निर्माण समृद्ध भारत के पुनर्निर्माण (आजादी के अमृतकाल) में निश्चित ही प्रेरक सिद्ध होंगे।

महाराज्ञी के शासनकाल में माँ नर्मदा आचमनीय थीं और श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु नर्मदा के दोनों ओर घाटों का सुव्यवस्थित निर्माण कराया गया था। साथ-ही-साथ नर्मदा नदी के सौंदर्गीकरण का कार्य भी कराया गया था। आजादी के इस अमृतकाल में नदियों के जीर्णोद्धार हेतु इस प्रकार के कार्य अनुकरणीय हैं। नदियाँ प्रदूषित हैं और उनको आचमनीय बनाने हेतु रानी दुर्गावती के विचारों पर शोध करके उनको लागू किया जा

---

[3]. सोलह वर्षों के शासन में प्रजाहितैषी काम किए,
कुएँ, बावली, मठ मंदिर के खूब वहाँ निर्माण किए।
प्रो. चित्राभूषण श्रीवास्तव के कविता-संग्रह से संकलित

सकता है। नदियों के परिरक्षण व उनके आचमनीय रूप का सातत्य बनाए रखने में महारानी का योगदान आज भी याद किया जाता है।

महारानी दुर्गावती ने धार्मिक समन्वय स्थापित करने हेतु भी अनेक सफल प्रयास किए थे, जिसके कारण विविध मतावलंबियों में परस्पर गतिरोध न होते हुए समन्वय स्थापित हुआ था। इसका एक उदाहरण यह हो सकता है कि रानी दुर्गावती के पति व श्वसुर भैरवमत के अनुयायी थे जबकि रानी ने वैष्णव मतानुयायी गुरु विट्ठलनाथ से दीक्षा प्राप्त की थी। दोनों ही मतों को राज्य का आश्रय भी प्राप्त था और इस प्रकार दोनों मतों में समन्वय से आम जनता में समरसता का वातावरण उत्पन्न हो गया था। महारानी दुर्गावती अपने धर्म के प्रति भी पूर्णरूपेण समर्पित रहती थीं। उन्होंने हिंदू देवी-देवताओं के विभिन्न मंदिरों का निर्माण कराया था और अनेक मंदिरों में प्रभु श्रीराम, भद्रकाली, विष्णु भगवान् आदि देवताओं की प्रतिमा स्थापित कर धार्मिक सद्भावना का संदेश दिया था।

इस संबंध में प्रख्यात महारानी दुर्गावती नामक ग्रंथ की विषयवस्तु का उल्लेख प्रासंगिक है–"महारानी दुर्गावती ने पं. बीरबल को पुरोहित के रूप में शिक्षा तथा दान देने के लिए नियुक्त कर दिया था। बीरबल शिक्षा में प्रबंध के साथ-साथ नियमित दान भी करते थे। अधिकांश स्थानों पर गोदान होता था। कहीं-कहीं प्रजा के कल्याणार्थ अन्नदान, भूदान व धातुदान आदि भी किया जाता था। धन समृद्धि होने के कारण दान देने में बीरबल को स्वायत्तता-सी प्राप्त थी। इसी प्रकार मंदिरों आदि का निर्माण भी खुले मन से किया गया था।[4] वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, जब एक ओर कट्टरवादी ताकतें गिद्धमुख किए भारतीय संस्कृति को निहार रही हैं, तो दूसरी ओर भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र 'समन्वय और समरसता' की भावना द्वारा इनको परास्त करना अति आवश्यक है, जो कि महारानी की राजनीति में दृष्टिगोचर होता था। क्योंकि किसी देश की महानता

[4]. महारानी दुर्गावती, श्री शंकर दयाल भारद्वाज, पृ. 23

और उसकी समृद्धि में समाज के प्रत्येक वर्ग का सहयोग अपेक्षित होता है और सभी के समन्वय व सहयोग से ही कोई राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त होता है।

गोंडवाना की महारानी ने इस विचार को सामाजिक कसौटी पर खरा उतरने दिया था। उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना ही पानी में डूबते हुए व्यक्ति को बचाया, यह उदाहरण ही उनके प्रजारंजन और महारानी की लोककल्याणकारी भावना को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त है। जब रानी युद्धक्षेत्र में संघर्षरत थीं, उस समय भी उन्होंने अपने सैनिकों के साथ कंधे से कंधा मिलाते हुए नेतृत्व प्रदान किया। महारानी का शरीर बाणों से बिंध जाने के बावज़ूद भी रानी अंतिम श्वास तक युद्धक्षेत्र में डटी रहीं और यह स्थिति उनके सभी सैनिकों के लिए एक उदाहरण बन गई। क्योंकि जब आपका शासक अंतिम परिस्थिति तक आपका साथ निभाता है, तो लोक का विश्वास स्वयमेव उस शासक को प्राप्त हो जाता है। इसी विश्वास को महारानी दुर्गावती ने अपने राज्य में प्राप्त किया था। लोककल्याणार्थ और अपने जीते-जी पराजित न होने का प्रण प्रजा में उनकी लोकप्रियता की ध्वजा को फहरा देता था और पूरा राज्य साहस, शौर्य व पराक्रम से भर जाता था।

वस्तुतः, महारानी दुर्गावती एक श्रेष्ठ महिला शासिका थीं और इसीलिए वे अपने राज्य की आधी आबादी का विशेष ध्यान रखती थीं, जबकि शेष प्रजा के कल्याणार्थ वे अपने मंत्रिमंडल के साथ गहन विचार-विमर्श करती थीं। उन्होंने अपने सैन्यदल में महिलाओं को उनकी अग्रणी भूमिका निर्वहन हेतु प्रेरित किया और उस सैन्यदल का नाम दुर्गा सेना रखा गया। श्री शंकर दयाल भारद्वाज द्वारा लिखित ग्रंथ में उल्लिखित है–'महारानी दुर्गावती के नेतृत्व में रामचेरी ने एक नारी सेना भी बना ली थी जो मातृभूमि पर मर मिटने के लिए तैयार थी। मदन महल छावनी जैसा बन गया था जहाँ पर युद्ध के परीक्षण होते थे। ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि सभी के सभी लोग मातृभूमि की पूजा करने के लिए ही पैदा हुए हैं।' ध्यातव्य है कि इस दुर्गा सेना की झलक महारानी लक्ष्मीबाई की सेना और भारतीय स्वतंत्रता समर में नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा सुसंगठित आजाद हिंद फौज में भी दिखाई दी थी। आजादी के इस अमृतकाल में

महिलाओं के सैन्यदल (भारत की तीनों सेनाओं में) का गठन व उसका विस्तार भारतीय मनीषा के चिंतन 'नारी तू नारायणी' को साकार मूर्त रूप प्रदान कर सकता है।

रानी दुर्गावती मात्र अधिकारियों के द्वारा प्रदत्त जानकारी पर आश्रित होकर प्रजा को शासित नहीं करती थीं, अपितु वे अपना वेश बदलकर जनता की नब्ज़ टटोलती थीं। वे सामान्य प्रजा के मध्य जाकर उनकी रोजमर्रा की जिंदगी में आने वाली चुनौतियों को प्रजा के द्वारा ही सुनती थीं और उन चुनौतियों का तत्काल अथवा राजदरबार के माध्यम से निवारण किया करती थीं। इस संदर्भ में मनुस्मृति (अध्याय 7) राजधर्म का वर्णन करती है–

सांवत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्वलिम्।
स्याच्चाम्नायपरो लोको वर्तेत पित्वन्नृषु॥[5]
अलब्धं चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेत्प्रयत्न्नतः।
रक्षितं वर्धयेच्चैव वृद्ध पात्रोषु निक्षिपेत्॥[6]
दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्म विदुर्बुधाः॥[7]

इस प्रकार स्पष्ट है कि आजादी के इस अमृतकाल में महारानी के विचारों को धरातल पर मूर्त रूप दिया जाए। रानी दुर्गावती महिलाओं के लिए एक आदर्श स्वरूप रही हैं और वास्तव में वे नारी सशक्तिकरण की मिसाल हैं। भारतीय चिंतन परंपरा (वेद, उपनिषद्,

---

5. महारानी दुर्गावती, श्री शंकर दयाल भारद्वाज, पृ. 22

6. मनुस्मृति, 7.88

7. मनुस्मृति, 7.99

पुराण, स्मृति आदि) में उद्धृत राजधर्म को रानी सम्यक् रूप से जानती थीं और उनकी स्वतन्त्र राज्य के लोकतंत्र तथा शासन में इसकी झलक भी दिखाई देती है। महारानी दुर्गावती के विचार सदैव से ही अनुकरणीय रहे थे और समसामयिक संदर्भ में प्रासंगिक भी हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- मनु मनुस्मृति, व्याख्या : पं. हरगोविंद शास्त्री, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वर्ष 2017
- शंकर दयाल भारद्वाज, महारानी दुर्गावती, सरस्वती शिक्षा परिषद्, महाकौशल प्रांत, वसंत पंचमी, वर्ष 2018
- शंकर दयाल भारद्वाज, दुर्गावती : एक बलिदान-गाथा, रानी दुर्गावती शोध संस्थान, जबलपुर, मध्य प्रदेश, वर्ष 2017
- वीरांगना रानी दुर्गावती–यशोगाथा, संपादक : डॉ. नीलम दुबे, जी.जे.एम.एस. इंटरनेशनल पब्लिकेशन, जबलपुर, म.प्र., वर्ष 2013-14
- वीरांगना का बलिदान, नगर निगम प्रकाशन, जबलपुर, वर्ष 1975
- प्रेरणा पथ, रानी दुर्गावती विशेषांक (नवंबर-दिसंबर, 2017), विद्याभारती महाकौशल प्रांत, जबलपुर, म.प्र.

डॉ. योगेन्द्र भारद्वाज

(संस्कृताचार्य, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली)

ईमेलः yogend1993@gmail.com